# जादुई राम की खोज में झाबुआ की पुनः यात्रा

महर्षि विश्वामित्र जी महाराज ने मुझे पिछले जन्मदिन पर एक सुखद उपहार दिया, और मुझे झाबुआ में "जादुई राम" दिखलाने का वादा किया। उन्होंने मुझे यह भी बतलाया की "जादुई राम" जिन्हें मैं झाबुआ में देखूंगा, यह अवधारणा परमहंस श्री रामकृष्ण महाराज जी द्वारा दी गयी है।

**झाबुआ तब** :— आनंद के साथ 13 वर्षों के अंतराल के बाद मैं फिर से झाबुआ पंहुचा। मुझे याद है, मैंने इंदौर सेंट्रल जेल में, ऐसे कई अपराधियों का साक्षात्कार लिया, जिन्हें राम नाम के जाप से अद्भुत परिणाम प्राप्त हो रहे थे। तथाकथित कलंकित समाज में भीतर से आये इस बदलाव के परिणाम स्वरुप कई दोषियों को पैरोल प्राप्त हुए, कुछ को फांसी के फंदे से छुटकारा मिला, तो कुछ कैदियों को ससम्मान रिहाई भी मिली। स्वामी विश्वामित्रजी महाराज द्वारा 1998 में राम नाम के माध्यम से सुधार लाने के इस प्रयास का ही कुछ ऐसा प्रभाव था। उस समय मैंने जेल से निवृत्त उन कैदियों का पता लगाया जो कि झाबुआ या उसके आस पास रहते थे और मैंने पाया की न सिर्फ जेल के भीतर बल्कि बाहर की जनजातीय आबादी में भी अद्भुत सुधार हो रहे थे। झाबुआ और आलीराजपुर, जो कि अपराधों की वजह से कुख्यात थे, और एशिया की अपराधिक सूची में अव्वल थे, ऐसे जिलों के कलंकित और अंधकारमय समाज के लिए राम नाम एक दीपक का कार्य कर रहा था और समाज को ज्ञान का मार्ग दिखा रहा था।

**झाबुआ अब** :— आज मैंने फिर झाबुआ का दौरा किया और पाया कि, पहले की तुलना में लोगों की जीवनशैली में, विचारों में, बहुत बड़े तथा विशाल बदलाव आये हैं। हालाँकि, गरीबी, बेरोजगारी, बंजर भूमि, आज भी वहां के जीवन का एक अभिन्न अंग है परन्तु सामाजिक व मानव विज्ञान की दृष्टि से आज झाबुआ पहले जैसा नहीं रहा। झाबुआ के पूर्व जिला पुलिस अधीक्षक श्री आर. पी. सिंह के अनुसार अब झाबुआ एशिया की अपराधिक सूची में काफी नीचे आ गया है यह परिणाम "राम नाम आन्दोलन" का ही है, जो कि पिछले लगभग 16 वर्षों से झाबुआ में सक्रिय है। श्री सिंह ने पुलिस कर्मचारियों को भी सलाह दी थी कि वे भी श्रीरामशरणम् जाया करें, ताकि वे समाज में आदर व सम्मान पा सकें। अतिरिक्त जिला पुलिस अधीक्षक श्री जगदीश डावर जी ने बताया कि झाबुआ में अपराध दर 90% से नीचे आ गयी है, और इसके लिए उन्होंने "राम नाम द्वारा सुधार आन्दोलन" को धन्यवाद भी दिया। राम नाम न केवल सामाजिक कुरीतियों, पुराने विचारों व अंधविश्वासों को जनजातीय समाज से बाहर कर रहा है, बल्कि सामाजिक सुधार का सपना भी साकार कर रहा है।

**जादुई राम का अनुभव** :— भील समाज में लड़की के परिवार को दूल्हे के परिवार से दहेज मिलता है। एक लड़की, जो श्रीरामशरणम् परिवार से जुड़ी थी, का विवाह एक ऐसे भील परिवार में कर दिया जो कि भक्तिभाव वाला नहीं था। वह दिन–रात यही सोचती रही कि उसके माता–पिता ने उसे इस शादी के लिए मजबूर क्यों किया। लड़की का ससुराल ताड़ी और शराब का व्यवसाय करता था। परिवार के लोग मांस–मदिरा का सेवन भी करते थे। एक दिन लड़की का पति दूसरी महिला (सौतन) को घर ले आया। अंततः लड़की ने स्वयं घर–परिवार में बदलाव लाने की ठानी और 25 लाख राम नाम जाप करने का संकल्प लिया, ताकि वह परिवार की जीवनशैली में बदलाव ला सके। कुछ समय पश्चात ही राम नाम ने अपना चमत्कार दिखाना शुरु कर दिया व उसके परिवार के व्यवहार में परिवर्तन आने लगा, और सारी बुरी आदतें धीरे–धीरे छूटने लगी। यही नहीं, गांव के दूसरे परिवार जो शराब बनाने व बेचने का व्यवसाय करते थे उनमें भी बदलाव आने लगा। यह अकल्पनीय बात है कि आज उसी गांव के कुछ 600 भीलजन श्रीरामशरणम् परिवार का हिस्सा बन गए हैं। कुछ ऐसा है "जादुई राम" का प्रभाव जिसे मैं झाबुआ में अनुभव कर रहा हूँ।

**आदिवासी और शहरी समाज में विरोधाभास** :— मैं एक शहरवासी हूँ और दिल्ली में रहता हूँ, पिछले कुछ दशकों में श्रीरामशरणम् के राम मंत्र ध्वनि के साथ ही बड़ा हुआ हूँ। चेहरे पर मुस्कान, जोड़े हुए हाथ, हाथों में माला, विनम्रता, साफ सुथरे कपड़े, हमारे कुछ प्रधान गुण हैं। परन्तु हम अभी भी आध्यात्मिकता की अल्पविकसित अवस्था में ही हैं, क्योंकि हमारा दिमाग रुढ़ियों और पुरानी अवस्थाओं में ही जकड़ा हुआ है, हम आज भी आध्यात्मिक अनुभव के स्थान पर माला की गिनती पर ही गर्व महसूस करते हैं, परन्तु झाबुआ और उसके आसपास के निरक्षर जनजातियों के साधक ज्ञानी आत्माएं बन गयी हैं

और स्वयं ही परम गुरु श्रीराम की मालाएं बन गयी हैं। वे अनंत इकाई में जा मिली है, उनकी चुनौतियों की गहराई को हम नाप नहीं सकते, पर वह मासूमियत से मुस्कुराते हुए, बिना किसी संकोच के राम नाम में अपना विश्वास व श्रद्धा बनाये हुए हैं, और उन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे पीड़ित हैं दुखी हैं अथवा उनकी इच्छाओं की पूर्ति हो रही है या नहीं। वे राम नाम पर कभी शक नहीं करते।

**गुरुजनों के साथ 100% निकटता** :— इन सभी जनजातीय साधकों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए स्वामीजी महाराज, प्रेमजी महाराज, डा. साहिब जिन्हें हम प्यार से महर्षि विश्वामित्र जी महाराज पुकारते हैं, ये सभी मिलकर दिव्य प्रयास कर रहे हैं। हमारे द्वारा किये गये 170 इन्टरव्यू में यह सामने आया कि आवश्यकता पड़ने पर एक न एक गुरु साधक के साथ हमेशा उपस्थित रहते हैं। स्वामीजी महाराज मरते हुए प्राणी को जीवन दान देते हैं, प्रेमजी महाराज आपत्ति के समय साधक के साथ उपस्थित रहते हैं, व महर्षि विश्वामित्रजी महाराज, साधकजनों की नाकामयाबी व गलतियों के दौरान उनके लिए प्रेरणास्त्रोत का काम करते हैं।

उनमें और हममें चौंकाने वाला अंतर है हम सभी महाराजजी को मिलने की जिद करते रहते हैं, और किसी तरह अपना चेहरा उन्हें दिखाना चाहते हैं (जो कि स्वयं के दर्शन देना होगा, न कि महाराजजी के दर्शन पाना)। हम अकसर गुरुजी का कीमती समय हमारी रोज़मर्रा के जीवन और उससे जुड़ी तुच्छ समस्याओं , कामनाओं में नष्ट कर देते हैं और उनका अमूल्य समय अपने व्यक्तिगत हितों में नष्ट कर देते हैं।

**हालाँकि मन्दिर से दूर लेकिन भगवान के करीब** :— पर झाबुआ की कहानी कुछ अलग है, यहां के साधकजनों को महाराजजी के दर्शन वर्ष भर हो या न हो, परन्तु मौका मिलने पर भी वे महाराजजी का बहुमूल्य समय अपनी निजी समस्या या कामनाओं सम्बन्धी बातचीत करके व्यर्थ नहीं करते।

हमारे गुरुजनों की तीनो पीढ़ियां इन साधकों के मन—मस्तिष्क में छाई हुई है जो कि शोर अथवा मौन में किये गए लाखों राम नाम के जापों से अमिट हो गयी है, और इस तरह से ये साधकजन सदा ही ईश्वर के करीब हैं चाहे मंदिर से कितने ही दूर हों।

कई इन्टरव्यू से यह सामने आया है कि भील साधकजन भगवान को ही उनके सुख—दुःख का साथी मानते हैं। मैं यह देख कर आश्चर्यचकित रह गया कि गुरु से दूर होने के बावजूद वे आध्यात्मिक रुप से गुरुजन के कितने निकट होने का आनंद उठाते हैं। एक जनजातीय लड़की ने मुझे बताया की वह अपने परिवार द्वारा उस पर किये जा रहे अत्याचार से इस प्रकार दुःखी थी कि उसने आत्महत्या करने की ठान ली थी। तब गुरुजी ने उसे स्वप्न में दर्शन दिए और भजन की दो पंक्तियां गाने को कहा। इस अनुभव ने उसका जीवन ही बदल कर रख दिया। अब वह नियमित रुप से श्रीरामशरणम् में भजन गाती है और अपने परिवार और जीवन की कठिनाइयों का सामना सफलतापूर्वक कर रही है, और उसमें बदलाव लाने का प्रयास कर रही है। ऐसी होती है राम की कृपा।

**अमृतवाणी की शक्ति** :— कल्याणपुरा में श्री गोपाल नाम का एक साधक संध्या के समय श्रीरामशरणम् के बाहर कुर्सी पर बैठकर अकेला अमृतवाणी का पाठ कर रहा था। उसने देखा कि एक काली नागिन उसके पैरों के पास से होकर गुजर गयी, उसको बिना कोई नुकसान पहुंचाए, जो कि सांपों की प्रकृति के बिलकुल विपरीत है, परन्तु जादुई राम ने यहां भी अपनी शक्ति दिखाई, और एक साधक के जीवन की रक्षा की।

कालीदेवी में एक मुस्लिम लड़की आरिफा तथा उसके साथ के कुछ अन्य लोगों ने दूर अपने घरों में बैठे बैठे देखा कि श्रीरामशरणम् जहां कि "सर्वशक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः" का जाप अनुष्ठान चल रहा है, उस स्थान को एक दिव्य प्रकाश ने चारों ओर से घेर लिया है।

एक दूसरे गांव में एक परिवार प्रतिदिन सारे समुदाय के लिए अमृतवाणी पाठ का आयोजन करता था, उसी परिवार का एक बालक अपने दोस्त के साथ मोटर साइकिल पर घुमने गया था, और इस सैर के दौरान किसी अन्य बड़े वाहन के टक्कर होने के कारण वह बालक दुर्घटनाग्रस्त हो गया। उस बालक को बेहोशी की हालत में अस्पताल पहुंचाया गया। जब उस लड़के को होश आया तो उसने बताया की उसे श्री अधिष्ठान जी के दर्शन हुए और अमृतवाणी सुनाई दी। सौभाग्य से लड़का बच गया और उसे चोट भी बहुत कम आई।

**राम नाम जप – झाबुआ के आदिवासी जीवन के बदलते क्षितिज का नाम** :– यहां पर जीवन कठिन है, स्वास्थ्य सुविधाएं अपर्याप्त हैं, लोगों की खरीदने की क्षमता सीमित है, साथ ही जीवन यापन के साधनो का भी अभाव है, इन सब कठिनाईयों से छुटकारा पाने के लिए **"झाबुआ के बापू''** यहां के साधकजनों को लगातार सलाह देते हैं कि वे चालीस रात्रियों तक पूर्णिमा के जाप करें, जागरण करें। चालीस दिनों तक, दिन में सात बार अमृतवाणी का पाठ करें। वे साधकजनों को प्रेरित करते हैं कि वे अपनी कठिनाइयों को दूर करने के लिए एक करोड़ पच्चीस लाख जाप करने का संकल्प लें। यहां पर सैंकड़ों साधकजन ऐसे कई संकल्प लेते हैं, और लाखों करोड़ों जाप करते हैं।

ऐसी ही एक महिला साधक ने गहन जाप करके 12 वर्षों से खोये (गुम) हुए अपने इकलौते बेटे को पुनः पाया। एक नवजात लड़की के चाचा ने 30 मिनट तक श्रद्धा से राम जप करके उसे पुनः जीवन दिया। ऐसी ही एक और महिला जो नवरात्री के समय राम नाम के जाप में डूबी हुई थी, को खबर मिली कि उसके दो बेटों की गाड़ी एक 25 फीट गहरे गड्डे में जा गिरी है। आश्चर्य की बात यह है कि इतनी गंभीर दुर्घटना के बावजूद वे दोनों न सिर्फ जीवित थे, बल्कि उन्हें चोट भी बहुत मामूली आई थी। झाबुआ में जादुई राम कुछ इस प्रकार चमत्कार करते हैं।

**प्रार्थना सभा** :– राम नाम के साधक एक परिवार के रुप में सदैव साथ काम करते हैं, और वे जरुरत के समय एक दूसरे के लिए सदैव उपलब्ध रहते हैं। एक युवा लड़की जिसे एक ट्रेक्टर ने रौंद दिया था, उसे अस्पताल समय पर पहुंचाया गया। अस्पताल बहुत दूर था। ऐसे में एक ट्रेक्टर ने ही एम्बुलेंस का काम किया। उस समय गांववासियों ने तुरंत श्रीरामशरणम् का ताला खोला, श्री अधिष्ठान का पर्दा उठाया और जाप में लग गये। करीब 60 साधकों ने रात भर राम नाम के जाप को जारी रखा, और सुबह होते उन्हें सूचना मिली कि लड़की की हालत में काफी सुधार आया है। ऐसी शक्ति है राम जाप में और प्रार्थना में जो दूसरों के लिए की गयी हो।

महर्षि श्री विश्वामित्रजी महाराज ने झाबुआ में एक प्रार्थना सभा का गठन किया है, जिसके माध्यम से लोगों को कुछ ही समय में राहत मिलती है, जब भी आपात्तकालीन स्थिति में कोई फोन कॉल आता है तो सूचना तुरंत ही समिति के सदस्यों तक पहुंचा दी जाती है, और उनसे अनुरोध किया जाता है की वे जहां भी हैं वहीं पर जाप करने के लिए बैठ जाएं। ये जाप अद्भुत परिणाम दे रहे हैं और थोड़े ही समय में अच्छी खबर जिसके लिए प्रार्थना रखवाई गयी थी, के परिजनों द्वारा समिति के सदस्यों तक पहुंच जाती है। कुछ ऐसा प्रभाव है प्रार्थना का कि, जो लोग इस प्रार्थना सभा में सम्मिलित हैं उनके पास खुद की सिद्धियां है, और वे जरुरतमंद लोगों के लिए प्रार्थना भी करते हैं, और अच्छे परिणाम भी पाते हैं।

एक लड़के ने अपने पिता की विकट अस्वस्थता की सूचना प्रार्थना सभा को दी। बालक के पिता काफी समय से बीमार थे और डॉक्टर ने भी जवाब दे दिया था, कि वे कुछ ही घण्टों के मेहमान हैं, और अब किसी बड़े हॉस्पिटल में दाखिला करने का भी कोई फायदा नहीं। लड़के ने अपनी माला पिता के हाथ में दे दी, और स्वयं भी प्रार्थना करने लगा। डॉक्टर को अपनी सलाह पर इतना भरोसा था कि उसने एम्बुलेंस की जगह शववाहन को बुलवा लिया। परन्तु कुछ समय बाद लड़के के पिता ने इलाज करवाने सम्बन्धी प्रतिक्रिया देना शुरु कर दिया, और उन्हें तुरन्त ही बड़े हॉस्पिटल में उसी शववाहन में पहुंचाया गया। इस प्रकार, झाबुआ में चल रही प्रार्थना और राम जाप ने यमराज को भी उल्टे पैर लौटा दिया।

इस तरह मैंने महर्षि डॉ. विश्वामित्र जी महाराज के मार्गदर्शन में झाबुआ में **"जादुई राम"** को पाया, झाबुआ की मेरी यात्रा पर विस्तृत वर्णन (एक पुस्तक के रुप में) कुछ ही समय में आ रहा है।

**डॉ. गौतम चटर्जी,**
**नई–दिल्ली**